मन बस गयो नन्द किशोर

हो मन बस गयो नंदकिशोर ,
अब जाना नहीं कहीं और ,
बसालो वृन्दावन में -2

सौंप दिया अब जीवन तोहे -2
राखो जिस विधि रखना मोहे -2
तेरे दर पे पड़ी हूँ सब छोड़ ,
बसालो वृन्दावन में -2

चाकर बनकर सेवा करुँगी -2
मधुकरी मांग कलेवा करूंगी -2
तेरे दरश करुँगी उठ भोर -2
अब जाना नहीं कहीं और ,
बसालो वृन्दावन में -2

अर्ज मेरी मंजूर ये करना -2
वृन्दावन से दूर न करना -2
कहे "मधुप" हरी जी हाथ जोड़ -2
अब जाना नहीं कहीं और ,
बसालो वृन्दावन में -2

मन बस गयो नंदकिशोर ,
अब जाना नहीं कहीं और ,
बसालो वृन्दावन में -2 ।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33148/title/man-bas-gyo-nanad-kishor

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |